अध्याय XX

निगमित सामाजिक दायित्व

स्टील आर्थॉरिटी ऑफ इंडिया लि॰ (सेल)

सेल सामाजिक दायित्वों के प्रति प्रतिबद्ध है । इस क्षेत्र में प्रमुख गतिविधियां संक्षिप्त में नीचे दी गई हैं :

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा

देश भर में 20 स्टेट-ऑफ-दा-आर्ट अस्पताल है जिनमें कर्मचारियों, उनके आश्रितों तथा आस-पास के लोगों के लाभ के लिए लगभग 4500 बिस्तर है इनका प्रबंधन लगभग 6000 डॉक्टरों, चिकित्सा तथा पैरामेडिकल स्टॉफ द्वारा किया जाता है । सेल ने नेशनल एड्स कट्रोल आरगेनाइजेशन (एन ए सी ओ), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के साथ मिलकर एक एड्स जागरूकता एवं नियंत्रण कार्यक्रम शुरू किया है । अब तक सभी संयंत्रों/इकाइयों में एन ए सी पी-II की नीतियों को कार्यान्वित करने के लिए लगभग 320 लाख रूपए प्राप्त हुए है।

क्षेत्रीय विकास

विभिन्न सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण से पता चला है कि सेल द्वारा किए गए प्रयासों से काफी लाभ हुआ है जो 8-15 किलोमीटर के दायरे के ग्रामीण इलाकों तक है । स्थानीय पंचायतों, सामाजिक संगठनों तथा संबंधित क्षेत्र के लोगों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ राज्य सरकार, जिला प्रबंधन के साथ गहन समन्वय में प्रत्येक संयंत्र द्वारा कार्यक्रम चलाए गए हैं । गत 5 वर्ष में, प्रत्येक वर्ष विभिन्न संयंत्रों ने अपने आबंटित बजट में से 100 लाख रुपए खर्च किए हैं ।

शिक्षा

कर्मचारियों के बच्चों तथा आश्रितों की सर्वोत्तम शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए सेल ने लगातार प्रयास किया है। गत वर्षों में इसने इस्पात बस्ती में लगभग 200 स्कूल खोले हैं जिनमें 6000 से अधिक अध्यापकों को नियुक्त किया गया जो 1,00,000 से अधिक बच्चों को आधुनिक शिक्षा देते हैं। भिलाई इस्पात संयंत्र ने छत्तीसगढ़ क्षेत्र के 36 आदिवासी बच्चों को गोद लिया है तथा उनके लिए निःशुल्क शिक्षा, भोजन और आवास की व्यवस्था कर रहा है ।

खेल तथा सांस्कृतिक गतिविधियां

सेल ने काफी समय से खेल-कूद का विकास तथा पोषण किया है तथा भिलाई, राउरकेला तथा बोकारों में क्रमशः हैडबॉल, हॉकी तथा फुटबाल की अकादमियां भारतीय खेल प्राधिकरण (एस ए आई) के साथ मिलकर स्थापित किए गए संयुक्त उद्यम हैं । प्रशिक्षण के फलस्वरूप इन अकादमियों को गर्व है कि उन्होंने राष्ट्रीय, राष्ट्रमंडल तथा एस ए एफ चैम्पियन तैयार किए हैं । सेल की 4200 रुपए प्रति वर्ष की छात्रवृत्ति भी है जिससे सेल परिवार के लगभग 30 बच्चों को राष्ट्रीय पदक प्राप्त करने अथवा राष्ट्रीय टीम में चयन होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

प्राकृतिक आपदा के दौरान सहायता

बाढ़ भूकंप आदि जैसी प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित लोगों की सहायता करने तथा उनके राहत की व्यवस्था करने के लिए सेल के कर्मचारी सदैव तत्पर रहते हैं । 21.5.1997 को जबलपुर तथा 26.1.2001 को गुजरात में आए भंयकर भूकंप तथा अक्टूबर 1999 और अक्टूबर 2001 को उड़ीसा पूर्वी समुद्री तट पर आए चक्रवात जैसी हाल की हुई प्राकृतिक आपदाओं में सेल के कर्मचारियों ने वित्त, राहत की सामग्री, चिकित्सा आपूर्ति, मकान तथा स्कूल का निर्माण जैसे हर संभव तरीके से सहायता की। विशेष रूप से 1999 में उड़ीसा में आए चक्रवात में सेल की ओर से बी एस पी के जरिए एकत्रित 1.00 करोड़ रु. की राहत सामग्री वितरित की गई।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लि॰ (आर.आई.एन.एल)

निगमित सामाजिक दायित्व

वर्ष 2000, में विनिर्माण उद्योग में श्रम स्थितियों के लिए सोशल एकाउंटेविलिटी इंटरनेशनल (एस ए आई) के अर्न्तगत एक वैश्विक आचार संहिता बनाई गई थी जिसका उद्देश्य सामाजिक रूप से जिम्मेदारी परक रोजगार पद्धतियों के मानकीकरण के लिए कर्मचारियों की कार्य परिस्थितियों को शामिल करते हुए निगमित सामाजिक दायित्वों के लिए स्वैच्छिक मानक विकसित करना है । इसी के अनुसार 9 प्रमुख क्षेत्रों के साथ एस ए-8000 आचार संहिता बनाई गई है । ये 9 क्षेत्र हैं :- (i) बाल मजदूरी, (ii) बंधुआ मजदूरी, (iii) स्वास्थ्य एवं सुरक्षा, (iv) संस्था बनाने की स्वतंत्रता, (v) पक्षपात, (vi) अनुशासनिक पद्धति, (vii) कार्य घंटे, (viii) प्रतिपूति तथा (ix) प्रबंधन हैं । भारतीय उद्योग के लिए ये सभी मानक बन गए हैं । विभिन्न क्षेत्रीय विकास संबंधी गतिविधियों के जरिए आर आई एन एल सामाजिक दायित्वों का लगातार निर्वाह कर रहा है । कंपनी के कस्बा प्रबंधन विभाग में क्षेत्रीय विकास से संबंधित एक अलग सैल है । प्रशिक्षण, रोजगार सृजित करने संबंधी योजनाओं के तहत वी एस पी में तथा इसके आस-पास के क्षेत्र की महिलाओं तथा युवाओं के आत्म निर्भरता के लिए सतत आधार पर पहल की जा रही हैं । विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए गठित दक्षता विकास संबंधी कार्यक्रमों की भी व्यवस्था की गई है।

अब तक तीन गावों को आर्दश गांव के रूप में उनका विकास करने के लिए गोद लिया गया है । इसके अतिरिक्त कम से कम एक गांव को प्रति वर्ष गोद लेने तथा शिक्षा, पीने के पानी, स्वास्थ्य तथा स्वच्छता पर बल देने की योजना बनाई गई है ।

सी एस आर से संबंधित गतिविधियों की योजना बनाने तथा इनका प्रबोधन करने के लिए एक समिति का गठन किया गया है ।

ग्रीष्म कालीन शिविर

ग्रीष्म अवकाश के दौरान स्कूल के बच्चों के लिए ग्रीष्म कालीन शिविर का आयोजन करना एक नियमित कार्य है । योग कक्षाएं तथा क्रिकेट, बैडमिंटन, वालीबॉल, तैराकी, स्केटिंग आदि जैसे विभिन्न खेलों के लिए प्रशिक्षण शिविरों का भी आयोजन किया जाता है ।

युवा हॉस्टल एसोएिशन

वी एस पी बस्ती में कार्य कर रहे अंतर्राष्ट्रीय युवा संघ द्वारा सहायता प्रदत भारतीय युवा हॉस्टेल एसोसिएशन जानकारी आदान-प्रदान करने संबंधी विभिन्न कार्यक्रम तथा स्वास्थ्य शिविरों का आयोन करता है ।

नेशनल मिनरल डवलपमेंट कारपोरेशन (एन एम डी सी)

अपनी सभी परियोजनाओं में एन एम डी सी ने स्कूल, अस्पताल, सामुदायिक केन्द्रों, बाजार स्थानों आदि जैसी सभी सुविधाओं तथा अवसंरचनात्मक सुविधाओं वाली अच्छी बस्ती विकसित की हैं ।

बैलाडिला परियोजनाएं अपने परियोजना अस्पताओं में उपलब्ध नि:शुल्क चिकित्सा सुविधाओं को स्थानीय वासियों तक विस्तार कर रहे हैं। आदिवासियों को उनके घर पर आवश्यक चिकित्सा देखभाल उपलब्ध कराने के लिए परियोजना डॉक्टरों को पैरा मेडिकल स्टॉफ तथा दवाइयों के साथ गांवों का दौरा करने के लिए नियमित रूप से नियुक्त किया जाता है । परम्परागत खुले कुओं और लगाए गए ट्यूबवैलों से पीने का पानी उपलब्ध किया गया है ।

विकास का लाभ सभी को समान रूप से देने के लिए एन एम डी सी ने एक तरफ पंचायत नेताओं के साथ-साथ स्थानीय गांव प्रमुखों के साथ तथा दूसरी ओर परियोजनाओं में कार्य कर रही यूनियनों तथा संस्थाओं के साथ एक नियमित परामर्शदात्री प्रक्रिया की पहल की है । इन परियोजनाओं से संबंधित विभिन्न आदिवासी गांवों के सरपंचों के साथ आवधिक बैठकें की जाती है तथा उन्हें विकास संबंधी किए जाने वाले कार्यों की अंतिम सूचियों के बारे में बताया जाता है ।

कंपनी के संबंधित क्षेत्रों में तथा इनके आस-पास कंपनी की परियोजनाओं के विभिन्न कार्यों का विवरण निम्न प्रकार है :

चिकित्सा देखभाल

परियोजनाओं अस्पतालों में दान्तेवाडा जिला में रह रहे अनुसूचित जनजातियों (आदिवासियों) को निशुल्क भोजन सहित परिवार कल्याण से संबंधित सलाह देने तथा आपरेशन करने सहित सभी मामलों में (बाह्य रोगी तथा भर्ती रोगी) निशुल्क चिकित्सा सहायता दी जा रही है । भर्ती आदिवासी रोगियों के परिवारजनों के उपयोग के लिए आराम गृह की व्यवस्था की गई है । आसपास के गावों में प्राथमिक स्कूल के बच्चों के लाभ के लिए स्वास्थ्य जांच कार्यक्रम चलाए गए हैं ।

शिक्षा

आदिवासियों (स्थानीय आदिवासियों) के बच्चों तथा अनुसूचित जाति के छात्रों के लिए परियोजना के स्कूलों में निशुल्क शिक्षा सुविधाओं की व्यवस्था की गई है । अनेक स्कूल भवनों में अतिरिक्त कमरों, आश्रमों तथा छात्रवासों के निर्माण के अतिरिक्त एन एम डी सी राज्य सरकार के अनेक स्कूल भवनों तथा अपनी परियोजनाओं के आस-पास अन्य आदिवासी स्कूलों में बिजली के काम के साथ-साथ मरम्मत/नवीकरण कार्य नियमित रूप से कर रही है ।

पेय जल

आस-पास के गावों में पेय जल की आपूर्ति कराने के लिए अनेक हैंड पम्प/पानी के टैंक/खुले कुंए /ट्यूबवैल लगवाए गए हैं। एन एम डी सी स्थानीय लोगों के लाभ के लिए विभिन्न क्षेत्रों में ओवरहैंड टैंकों का निर्माण, परियोजना क्षेत्र से दूरस्थ शिविरों (श्रम शिविर, रिफ्यूजी शिविर, आदि) को पेयजल उपलब्ध कराने के लिए पाइपलाइन डालने, डिग्री कॉलेज/स्कूलों को पेयजल की व्यवस्था तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य इंजीनियरी विभाग के हैंड पम्प तथा सार्वजनिक उपयोग वाले पानी के टैंक की मरम्मत का कार्य भी कर रहा है ।

अवसंरचनात्मक सुविधाएं

कंपनी द्वारा निम्नलिखित अवसंरचनात्मक विकास संबंधी कार्य किए जा रहे हैं :

(क) सड़कें - एक गांव से दूसरे को जोड़ने वाले सभी मौसम में उपयुक्त सड़कें, एक गांव से दूसरे गांव तक शहर से गांव के लिए डब्ल्यू बी एम सड़कें आदि। विभिन्न गांवों को जोड़ने वाले मार्गों का निर्माण/सुधार, पी डब्ल्यू डी की सड़कों पर तारकोल डालना, राज्य के राजमार्गों की मरम्मत।

(ख) आसपास के गांवों तथा बस्तियों में विद्युतिकरण तथा स्ट्रीटलाइट की व्यवस्था करना ।

(ग) मदादी नाले पर इस्पात पुल बनाना

दक्षता विकास संबंधी कार्यक्रम

आठवीं पास स्थानीय आदिवासी युवाओं में सुधार करने के एक हल के रूप में प्रति वर्ष बैलाडिला परियोजनाओं ने एक दक्षता विकास कार्यक्रम शुरू किया है जिनमें इन परियोजनाओं के विभिन्न कार्य कलापों को स्पष्ट किया गया है । उन्हें वर्दी तथा अन्य सुरक्षा संबंधी उपस्कर उपलब्ध कराने के अतिरिक्त उन्हें प्रतिमास 1200 रु. दिए जाते हैं । उनकी दक्षता, निष्पादन तथा जानकारी में सुधार करने के लिए नियमित कक्षाओं का भी आयोजन किया जाता है ।

गांवों की महिलाओं को उनका अपना तथा समुदाय का विकास कार्यों में पहल करने के योग्य बनाने के लिए हिरोली, परीनार तथा परपा गांवों में आंगनवाडियों का गठन किया गया था । भारत माता महिला जागरण समिति जो एक स्वैच्छिक महिला संगठन है और जो एन एम डी सी में कार्य कर रहे अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग के कर्मचारियों द्वारा चलाया जाता है महिलाओं को सिलाई पौढ़ शिक्षा/घरेलू सामग्री आदि बनाने में प्रशिक्षण देने में लगी हुई है, को उपयुक्त आवास सुविधा दी गई है ।

एन एम डी सी द्वारा स्थापित स्थायी समुदायिक केन्द्रों में तथा श्रमिक शिविरों, में कर्मचारियों तथा स्थानीय लोगों/आदिवासियों के कल्याण तथा मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा साप्ताहिक फिल्मों का प्रबंध किया जाता है । परियोजना के सक्रिय सहयोग से स्थानीय युवाओं ने बैलाडिला आदिवासी तथा हरिजन बेरोजगार कामगारों की एक प्राथमिक सहकारी समिति का गठन किया है । चूंकि लौह अयस्क परियोजनाएं आदिवासी क्षेत्र में

स्थापित हैं, अत: इस परियोजना क्षेत्र में एक स्थानीय बाजार बनाया गया है जहां आदिवासियों को अपने उत्पाद किटंदुल तथा बछेली स्थित हाट में सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । आदिवासियों के अनन्य उपयोग के लिए पानी की सुविधा वाले तथा शेड (छत) वाले विशेष प्लेटफार्मों का निर्माण किया गया है । पिछले वर्षों में बैलाडिला परियोजना ने आदिवासियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए पर्यावरण संरक्षण हेतु बैलाडिला क्षेत्र में वृक्षारोपण के ठेके भी दिए हैं। इस प्रकार कल्याण स्वरूप उन 43 स्थानीय आदिवासियों को जिनकी भूमि अधिगृहित कर ली गई थी, को रोजगार दिया गया है। वर्ष 2001-2002 तक सामुदायिक विकास कार्यों पर बैलाडिला परियोजना ने लगभग 1600 लाख रु. खर्च किए हैं । वर्ष 2002-2003 के लिए एन एम डी सी ने अपने परियोजनाओं में तथा आस-पास 629.28 लाख रु. की कुल लागत से विभिन्न कार्य किए हैं ।

एन एम डी सी की अन्य परियोजनाओं नामत: कर्नाटक में दोणिमलाई तथा मध्य प्रदेश में पन्ना में सामुदायिक विकास कार्यक्रमों के अन्तर्गत ऐसी सुविधाओं का आसपास के गांवों तक विस्तार किया गया है । दोणिमलाई के पास के गांवों में दो बहुउद्देशीय सामुदायिक हॉलों का निर्माण किया गया है तथा इन्हें संबंधित गांवों की पंचायतों को सौंप दिया गया है ।

एन एम डी सी लौह एवं इस्पात संयंत्र, नागरनार, जगदलपुर (सी जी)

छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में एन एम डी सी ने नागरनार गांव के समीप एक लौह एवं इस्पात संयंत्र स्थापित किया है ।

इस संयंत्र के निर्माण के लिए छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने लगभग 288.99 हेक्टेयर निजी भूमि को अपने अधीन लिया है तथा छत्तीसगढ़ राज्य सरकार द्वारा आबंटित 114.01 हेक्टेयर सरकारी भूमि के साथ-साथ इस भूमि को भी एन एम डी सी को आबंटित कर दिया है । छत्तीसगढ़ राज्य में इस संयंत्र के आस-पास 10 कि॰मी॰ के प्रभावित क्षेत्र में रह रहे लोगों के सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य के सम्पूर्ण विकास हेतु एन एम डी सी एक विस्तृत सर्वेक्षण करने वाली उपयुक्त योजना के कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध है ।

प्रभावित 302 गांववासियों को उनकी भूमि के लिए वित्तीय मुआवजा दिया गया है तथा वे 98 व्यक्ति जिनकी सम्पूर्ण भूमि ले ली गई है के लिए कंपनी द्वारा मौजूदा परियोजनाओं में उपयुक्त रोजगार देने की व्यवस्था की गई है । किसी भी प्रभावित परिवार के किसी भी व्यक्ति जिसने एन एम डी सी द्वारा चलाई जा रही अथवा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी आई टी आई में प्रवेश लिया है, के प्रशिक्षण का खर्च भी एन एम डी सी वहन करेगा । भवन निर्माण सामग्री आदि की आपूर्ति हेतु निर्माण कार्यकलापों में स्थानीय सहकारी समितियों को तरजीह दी जा रही है ।

कुद्रेमुख आयरन ओर कंपनी लि॰

परियोजनाओं के अंदर तथा इसके आस-पास सामुदायिक विकास में कुद्रेमुख आयरन ओर कंपनी लि॰ ने काफी योगदान किया है । ऐसे कुछ विकासात्मक कार्य निम्न क्षेत्रों में किए गए हैं :

- शुद्ध पेय जल सुविधा
- शैक्षिक संस्थाओं को खेल के मैदान, इमारत, पुस्तकें तथा अन्य वित्तीय सहायता ।
- सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मनोरंजन संबंधी सुविधाओं का विकास ।
- स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाएं ।
- गरीब, विकलांग तथा दलितों को सहायता ।
- अस्पताल के भवनों का निर्माण तथा इसके उपस्करों की व्यवस्था करना ।
- पुल निर्माण ।
- तटीय क्षेत्र का विकास ।
- पुनर्वास ।
- सिंचाई हेतु पानी की आपूर्ति ।
- सिंचाई नालियों का निर्माण ।
- मैंगलोर स्थित पिलिकुआ निसारगा बांध के वाइल्ड लाईफ सफारी में पैंथर इन्क्लोजर का निर्माण ।

मैंगनीज ओर (इंडिया) लि० (मॉयल)

मॉयल ने एक आदिवासी गांव गोंदी जो मध्यप्रदेश में उकवा खान के समीप है, को अपनाया है । कंपनी ने अपनी लागू सामाजिक कल्याण संवर्धन योजनाओं के एक भाग के रूप में सड़कों की मरम्मत बेघर आदिवासियों के लिए घर का निर्माण आदिवासी बच्चों को शिक्षा देने के लिए स्कूल भवन का निर्माण जैसे विकासात्मक कार्यकलापों की एक बड़ी श्रृंखला शुरू की है।

मॉयल में लगभग 7100 कर्मचारी है जिनमें से 800 महिला कर्मचारी हैं । अपने नियमित सामाजिक दायित्वों के रूप में कंपनी अपनी खानों में तथा इसके आस-पास विभिन्न कल्याणकारी कार्यकलापों में लगी हुई है जिसमें चिकित्सा शिविरों, शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन, गांव को गोद लेना तथा सामाजिक वानिकी क्षेत्र आदि कार्य शामिल हैं । खनन क्षेत्रों में पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने के लिए कंपनी ने वनरोपण कार्यक्रम चलाए हैं । अब तक मॉयल ने लगभग 12 लाख छोटे वृक्ष लगाए हैं जो 80% की दर पर बचे हैं ।

स्पंज आयरन इंडिया लिमिटेड (सिल)

सिल अपने व्यवसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ-साथ अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों के बारे में सचेत है। कम्पनी का संयंत्र आदिवासी बाहुल क्षेत्र में स्थित है जहां अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़े वर्ग की आबादी है। कम्पनी इन सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग के कार्मिकों को भर्ती में प्राथमिकता देती है। इस समय कर्मचारियों की कुल संख्या 322 है जिनमें 27% कर्मचारी अनु. जाति/अनु. जनजाति और पिछड़े वर्ग के हैं।

सिल न केवल अपने कर्मचारियों और उनके परिवार के सामाजिक उत्तरदायित्वों से संबंधित कार्य कर रहा है, अपितु आन्ध्र प्रदेश के खम्मम जिले के पलोंचा में स्थित संयंत्र और बस्ती के आसपास की अत्यधिक आबादी के लोगों के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर रहा है। कम्पनी द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किए जा रहे और उन कार्यकलापों जिनमें कम्पनी सहायता दे रही है, को नीचे दर्शाया गया है;

क) अपने कर्मचारियों और उनके परिवार तथा स्थानीय आबादी को विभिन्न प्रकार की अवसंरचनात्मक सुविधाएं देना जैसे कि क्लोरीन युक्त पेय जल, बैंक संबंधी सुविधा, डाकघर, रसोई गैस के बिक्री केन्द्र आदि।

ख) जनता की सीधी भागीदारी द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा सुविधा की ओर मुख्य रूप से ध्यान देना। इसमें प्राथमिक सहायता केन्द्र खोलना, आसपास के क्षेत्र में आदिवासियों को चिकित्सा सुविधाएं देना, नेत्र कैंप, कुष्ठ रोग धाम कार्यक्रम, पोलियो कैंप, एड्स तथा अन्य स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा कैंपों जैसे चिकित्सा कैंप आयोजित करना। आदिवासियों तथा अन्य कमजोर वर्गों को भी निःशुल्क दवाइयां दी जाती हैं।

ग) कम्पनी इस क्षेत्र में शिक्षा के प्रसार में सक्रिय रूप से योगदान कर रही है। यह अपने परिसर में प्राथमिक स्तर से लेकर हाई स्कूल तक पाठशाला खोलने के लिए सहायता दे रही है। स्कूल निजी प्रबन्धन की सहायता से चलाए जाते हैं और यह न केवल कम्पनी के कर्मचारियों के बच्चों को सहायता देती है, अपितु स्थानीय बच्चों को भी सहायता प्रदान करती है। स्कूल में अंग्रेजी और तेलगू दोनों माध्यम से शिक्षा दी जाती है।

घ) कम्पनी बस्ती में और उसके आसपास के क्षेत्रों में प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने का कार्य कर रही है और विभिन्न प्रकार के उपायों से अपने संयंत्र के प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए वृक्षारोपण कार्य भी कर रही है। यह बराबर चलने वाला कार्य है। कम्पनी का महाप्रबंधक (वर्क्स) इस क्षेत्र के पर्यावरण नियंत्रण समिति का सदस्य है।

कम्पनी द्वारा किए जा रहे प्रयासों तथा दक्ष कार्मिकों की क्षमता का निरन्तर विकास से कम्पनी की जरूरतों को पूरा करने में सहायता मिलती है। इससे पलोंचा तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में ऐसे छोटे कारोबार की इकाइयों की स्थापना हुई है जो कम्पनी को विभिन्न प्रकार की तकनीकी और अन्य प्रकार की सेवाएं दे रहे हैं।

मेकॉन लिमिटेड

मेकॉन 60 से ही ग्रामीण/सामुदायिक कार्यकलापों के साथ व्यापक रूप से जुड़ा हुआ है। वर्ष 1976 में, इस कार्यकलाप को करने के लिए सामुदायिक विकास समिति के रूप में एक समर्पित ग्रुप बनाया गया था।

मेकॉन की सामुदायिक विकास समिति निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ कार्य कर रही है;

क) पर्यावरण के समान विकास में सहायता देना

ख) इष्टतम समृद्धि की दिशा में सामुदायिक उत्थान ताकि वे प्रगति के अंग बन सके।

ग) गरीब तबके की ओर ध्यान देना।

घ) सामान्य उद्देश्य की दिशा में गैर-स्वैच्छिक संस्थाओं तथा सरकारी एजेंसियों के साथ कदम से कदम मिला कर चलना।

निष्पादित कार्यों को नीचे संक्षेप में दिया गया है;

1. सामुदायिक शिक्षा योजना

इस योजना के तहत इस समय रांची में और उसके आसपास के गांवों में अंगीकृत स्लम/ग्रामीण/पिछड़े क्षेत्रों में गरीबों के लिए 12 प्राथमिक/प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र हैं।

2. संसाधन सृजन योजना

इस योजना के तहत इस समय 7 संसाधन सृजन केन्द्र हैं जिनमें गरीब महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

3. व्यवसायिक प्रशिक्षण संस्थान

व्यवसायिक प्रशिक्षण संस्थान नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग, नई से सम्बद्ध है। यह 1992 में आरम्भ हुआ था। यह गरीब और ग्रामीण छात्रों को तकनीकी शिक्षा देने के लिए था। इस समय यह संस्थान रेडियो और टी वी, बिजली तथा वैल्डिंग प्रौद्योगिकी से संबंधित तीन प्रकार की तकनीकी सहायता दे रहा है। वर्ष 2003 से कम्प्यूटर उपयोग का एक नया पाठ्यक्रम भी आरम्भ किया गया है। रैफेरिजरेशन तथा एअरकंडिशनरिंग तथा रेडियोग्राफी के कुछ अन्य पाठ्यक्रम भी शुरु करने की योजना है और इन्हें शीघ्र ही शुरू किया जाएगा। इन प्रशिक्षणों से लोगों को काम पाने में सहायता मिल रही है और वे स्वयं रोजगार कर रहे हैं।

4. अंगीकृत गांव

कम्पनी ने कुछ आदिवासी गांवों को अंगीकृत किया है और अंगीकृत गांवों में सामुदायिक शिक्षा योजनाओं संसाधन सृजन योजनाओं, व्यवसायिक प्रशिक्षण आदि पर ध्यान दिया जाता है।

5. वनरोपण कार्यक्रम

कम्पनी का बागवानी विभाग अंगीकृत गांवों में तथा कुछ पार्कों, स्कूलों, कालेजों और सार्वजनिक स्थानों के लिए पौध और पौधे वितरित करता है।

6. सामुदायिक औषधि कार्यक्रम

सामुदायिक औषधि कार्यक्रम में आम स्वास्थ्य जांच, एलोपैथिक उपचार, होमियापैथी उपचार तथा विशेषज्ञ चिकित्सा कैंप आदि शामिल हैं।

7. अन्य कल्याणकारी कार्यकलाप

इसमें स्कूल जाने वाले बच्चों और ग्रामीणों को कम्प्यूटरों तथा अन्य ट्रेडों और महत्वपूर्ण क्षेत्रों के प्रति जागरूकता लाने का कार्यक्रम शामिल है।

हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कन्स्ट्रक्शन लिमिटेड (एच एस सी एल)

कम्पनी के लगभग 80% कर्मचारी और उनका परिवार सेल आर आई एन एल के इस्पात संयंत्रों, बोकारो, भिलाई तथा वाइजैग में रहते हैं। इन इकाइयों ने वर्ष 2003-04 के दौरान निम्नलिखित कार्यकलाप किए :

- एच एस सी एल की बस्ती में वृक्षारोपण
- गणतंत्र दिवस तथा स्वतन्त्रता दिवस का आयोजन
- राष्ट्रीय महत्व के विशेष दिवसों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम

बर्ड ग्रुप की कम्पनियां

उड़ीसा मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन (ओ एम डी सी) के अन्तर्गत एंबुलेंश सुविधाओं सहित ठकुरानी में 20 बिस्तरों वाला एक अस्पताल कार्यरत है। आसपास के ग्रामीणों को इस अस्पताल में नि:शुल्क चिकित्सा मिलती है। महिला रोगियों की चिकित्सा के लिए ओ एम डी सी के अस्पताल में एक महिला मेडिकल आफिसर है। बिसरा स्टोन लाइम कम्पनी लि. (बी एस एल सी) का बीरमित्रपुर में एंबुलेंश सुविधा सहित 40 बिस्तरों का एक अस्पताल है।

आसपास के ग्रामीण नाममात्र फीस से इस अस्पताल में इलाज करा सकते हैं। इस अस्पताल का इमरजेंसी मामलों में राउरकेला स्थित राउरकेला इस्पात संयंत्र के इस्पात जनरल अस्पताल में इलाज की संधि है। ओ एम डी सी द्वारा समय-समय पर एक्स-रे, पेथोलौजीकल प्रयोगशाला, आडियोमीटरी ई सी जी, लंग फंक्शन जांच, दंत चिकित्सा, आपरेशन थियेटर आदि जैसी सुविधाओं द्वारा स्वास्थ्य जांच की जाती है। सरकार के आर एन टी सी पी, पल्स पोलियो, मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रमों को भी ओ एम डी सी तथा बी एल एल सी के अस्पतालों के माध्यमों से आयोजित किया जाता है। खोदे गए कुओं, ट्यूबवैलों आदि से पीने का पानी मुहैया कराया जाता है। दूरस्थ क्षेत्रों में पीने का पानी ले जाने के लिए कम्पनी के पास एक पानी की लारी है।

ओ एम डी सी तथा बी एस एल सी, दोनों, बिल्डिंगों के निर्माण के रूप में आस पास के क्षेत्रों में स्कूल और कालेजों, पाठ्य सामग्री की व्यवस्था करने, फर्नीचर देने, स्कूल बस आदि उपलब्ध कराने का कार्य भी करते हैं। ये कम्पनियां टी एल सी तथा दूसरे अन्य सरकारी कार्यकलापों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

स्थानीय गांवों के सक्रिय सहयोग से ये कम्पनियां पारिस्थिकीय सन्तुलन बनाए रखने के लिए अपनी खानों में वनरोपण का कार्य करती हैं।

जिंदल विजयनगर स्टील लि. (जे वी एस एल)

जे वी एस एल समाज के एकीकृत विकास के लिए अनेक कार्यकलाप करता है। विकास की अपेक्षाएं तथा सामाजिक कार्यकलापों को सामुदायिक जरूरतों और बदलते जीवन स्तर को ध्यान में रख कर अभिज्ञात किए जाते हैं। वर्ष 2003-04 के दौरान प्रमुख कार्यकलाप नीचे दिए गए हैं;

क) जे वी एस एल ने विजय विटठ्ल नगर नाम का एक नया टाऊनशिप बनाया है जिसमें इसके कर्मचारियों के लिए 358 मकान हैं जो इस औद्योगिक क्षेत्र में अपने किस्म का पहला टाऊनशिप है। एक अन्य 250 मकानों का टाऊनशिप जिसमें शापिंग काम्पलैक्स, सामुदायिक हाल तथा मंदिर हैं, का निर्माण किया जा रहा है।

ख) सामुदायिक स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के रूप में 22 बिस्तरों, पूर्ण एअर कंडीशनर युक्त गौण एवं क्षेत्रीय स्वास्थ्य सेवा सहित जिंदल संजीवनी अस्पताल जुलाई 2004 में स्थापित किया गया। कार्डिक जांच, अंटीनेटल क्लिनिक, टी.बी. जांच, रक्तदान तथा सामुदायिक बच्चों के लिए टीकाकरण जैसे अनेक स्वास्थ्य जांच सहित निशुल्क कैंप आयोजित किए गए।

ग) महिलाओं के लिए सिलाई का व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्र चलाया जा रहा है जिसमें कर्नाटक सरकार द्वारा एक वर्ष का मान्यता प्राप्त डिप्लोमा कोर्स कराया जाता है।

घ) प्याज तथा अन्य फसलों को उगाने के लिए पास के वाडु और केरीकुप्पा के दो गांवों में खेती करने के कार्य को लोकप्रिय बनाया गया।

ङ) आजमी प्रेम जी फाउन्डेशन के सहयोग से 35 लाख रुपए के निवेश से कम्प्यूटर जनित लर्निंग केन्द्र स्कूली बच्चों और प्राथमिक स्कूल के अध्यापकों के लिए खोला गया है। इस परियोजना में 40 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया है।

च) संतूर में स्थित सौ साल पुराने स्कूल छत्रपति शिवाजी स्कूल का बासकेट बाल, फुटबाल ग्राउंड तथा अन्य सुविधाओं से उद्धार किया गया है।

छ) संतूर में 1.4 किलोमीटर सीमेंट की सड़क बनाई गई है।

सेसा गोवा ग्रुप की कम्पनियां

परिसरीय विकास

सेसा गोवा ने 1960 के दशक के आरम्भ में व्यापक आधार पर सामुदायिक एवं सामाजिक विकास के कार्यक्रमों को आरम्भ किया था। प्रारम्भ में यह कार्य आसपास के गांवों में पीने का पानी उपलब्ध कराना तथा खनन मशीनों के अनुरक्षण एवं प्रचालन में स्थानीय युवकों को आन्तरिक प्रशिक्षण देने से संबंधित कार्य थे। इससे लाभप्रद रोजगार मिला। बाद में शीघ्र ही स्थानीय समुदायों के लिए अन्य कार्यक्रम किए गए जिसमें सामुदायिक स्वास्थ्य, प्राथमिक उपचार तथा एंबुलेस सेवाएं शामिल थीं।

कम्पनी ने प्रचुर एवं सीमांत धान के खेतों को उनके मूल स्वरूप में लाने के लिए समुदाय के साथ भागीदारी माध्यम से कार्य आरम्भ किया। तीन वर्ष के संयुक्त प्रयास से किसानों को धान की भरपूर फसल मिली।

कम्पनी ने सामुदायिक विकास कार्यक्रम बनाने का निर्णय लिया गया। तदनुसार, 15 लाख रुपए की लागत से एक प्रख्यात संस्थान के माध्यम से आस पास के समुदाय का सामाजिक-आर्थिक अध्ययन करने का कार्य किया गया। अध्ययन से समुदाय की अपेक्षाओं का पता लगाने में सहायता मिली और आधारभूत विकासात्मक आवश्यकताएं पूरा करने में सहयोग मिला।

सेसा गोवा ने अपने सामाजिक कार्यकलापों और

उत्तरदायित्वों को बढ़ाने के लिए 1996 में सेसा सामुदायिक विकास फाउन्डेशन की स्थापना की। इस दिशा में सेसा टेक्निकल स्कूल और सेसा गोवा फुटबाल अकादमी की स्थापना की गई जिसमें स्थानीय युवकों को तकनीकी शिक्षा और फुटबाल की कोचिंग दी जाती है।

सेसा टेक्निकल स्कूल की स्थापना आसपास के गांवों के बच्चों को तकनीकी शिक्षा देने के लिए की गई थी। इस स्कूल में पांच ट्रेडों अर्थात् फिटर, वैल्डर, मैकेनिक, ड्राफ्टमैन तथा इलैक्ट्रिकल की तकनीकी टेक्निकल ट्रेनिंग दी जाती है। स्कूल का मुख्य उद्देश्य स्थानीय युवकों को रोजगारोन्मुखी क्षेत्र में प्रशिक्षण देना है ताकि उन्हें उद्योगों में रोजगार प्राप्त करने के अवसर मिले।

सेसा फुटबाल अकादमी की स्थापना 80 लाख रुपए की आरम्भिक पूंजी तथा 30 लाख रुपए के वार्षिक बजट से की गई थी। यह अकादमी चार वर्षीय कार्यक्रम के लिए 30 प्रशिक्षकों के आवास सहित आवासीय अकादमी है। प्रशिक्षणार्थियों को फुटबाल ने व्यवसायिक प्रशिक्षण के अलावा औपचारिक शिक्षा दी जाती है। इस अकादमी से उत्तीर्ण छात्रों का राष्ट्रीय स्तर के व्यवसायिक क्लब स्वागत करते हैं।

सेसा गोवा मिनरल फाउन्डेशन ऑफ गोवा का संस्थापक सदस्य और प्रमुख योगदान दाता है। इस फाउन्डेशन की स्थापना सामाजिक एवं पर्यावरणात्मक कार्यक्रमों को निष्पादित करने के लिए गोवा में खनिज उद्योग द्वारा की गई है।